B.A part I (H & subsi) philosophy

S10 अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

Jain Philosophy (जैन-दर्शन)

जैन शब्द की उत्पत्ति 'जिन' से हुआ है जिसका अर्थ है- 'विजयी' अर्थात रागद्वेषादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला। जैन अपने धर्म प्रचारक सिद्धों को 'तीर्थंकर' कहते हैं। और उनकी संख्या चौबीस है। ऋषभदेव इसके प्रथम तीर्थंकर हैं पार्श्वनाथ इसके तेइसवें तीर्थंकर हैं और महावीर इसके चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर बताये जाते हैं रागद्वेषादि पर विजय प्राप्त कर लेने के कारण इन्हें 'महावीर' और 'वीतराग' भी कहा गया है। जैन दर्शन में सर्वज्ञ सिद्ध पुरुषों को अर्हत भी कहा जाता है। जैन दर्शन दो सम्प्रदायों में विभक्त है- श्वेताम्बर और दिगम्बर। श्वेताम्बर सम्प्रदाय में मुनि श्वेत वस्त्र धारण करते हैं और दिगम्बर सम्प्रदाय के लोग निर्वस्त्र अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। दिगम्बर आचार पालन में अधिक कठोर माने गये हैं, जबकि श्वेताम्बर कुछ उदार हैं। दिगम्बर सम्प्रदाय में स्त्री शरीर से मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती, किन्तु श्वेताम्बर सम्प्रदाय ऐसा नहीं मानता। जैन चार्वाक और बौद्ध की तरह नास्तिक दर्शन है। यह ईश्वर में उसी तरह विश्वास नहीं रखता जैसे चार्वाक और बौद्ध नहीं रखते। अतः यह अनीश्वरवादी (Atheism) दर्शन कहलाता है। बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन में बहुत हद तक समानता है। फिर भी कुछ मुद्दों पर उनका मतभेद भी है। बौद्ध दर्शन आत्मा की सत्ता में अविश्वास रखता है वहीं जैन-दर्शन आत्मा में आस्था रखते हुए मानता है कि आत्मा असंख्य हैं, जिनका निवास विश्व की भिन्न-भिन्न वस्तुओं में है।